IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मुगल युगीन राजपूताना की नील मंडी–बयाना

प्रस्तुतकर्ताः

ड़ॉ. बीना कौशिक

सह–आचार्य (इतिहास)

स.पृ.चौ राजकीय महाविद्यालय,अजमेर

शोध पत्र सारः

महाभारत काल में उत्तर भारत के क्षेत्र श्रीपथ या बानासुर स्थान गंभीरी नदी के बाएं किनारें एक दूसरे के समानांन्तर दो पहाड़ी श्रृंखलाओं के मध्य और अरावली पर्वतमाला के तलहटी पर स्थित बयाना राजपूतों के जादोन वंश का प्रतीक रहा। रणनीतिक रूप से दिल्ली से ग्वालियर और दक्कन के मार्ग पर दक्षिण पूर्व राजपूताना में स्थित बयाना की भौगोलिक स्थिति ने मध्य युग में मुस्लिम विजेताओं का ध्यान आकर्षित किया जिन्हानें इसे अपनी शक्ति का केन्द्र बनाया, जो परिष्कृत शिल्प कौशल के साथ कृषि और पत्थर का उन्नत औद्योगिक क्षेत्र बन गया। मध्य युग में भारतीय उपमहाद्वीप में बुनाई की तकनीकों में सुधार के कारण रेशम और सूती दोनों प्रकार की वस्त्र सामग्री का उत्पादन हुआ। भारत के बाज़ारों में कपड़ा उद्योग व यूरोप में ऊनी डद्योग में उपयोग के लिए एक संसाधित रंजक के रूप में नील सत्रहवीं शताब्दी में निर्यात होने के कारण एक अभूतपूर्व उत्पादक के रूप में प्रसिद्ध हुई। नील रंग की बहुतायात व व्यापक घरेलू और विदेशी मांग ने नील के उत्पादन और व्यापार को प्रोत्साहित किया। मध्य युगीन काल में भारत में विशेषकर मुगल काल के दौरान कपास को रंगकर कपड़ा बनाने और कपड़ा रंगने में उपयोग की जाने वाली तकनीक,रूपांकन और प्रोद्यौगिक में अति उत्साह दृष्टिगत होने से बयाना व्यापार–वाणिज्य की दृष्टि से आर्थिक समृद्धता बढ़ने लगी। वस्त्रों के उत्पादन में कपड़ों के साथ–साथ सजावटी वस्तुएं, दीवारों के पर्दे,कालीन, और तम्बू आदि सहित विभिन्न उपयोग के लिए जरूरत को पूरा करने के लिए नील की आवश्यकता बढ़ने लगी। बयाना में निर्मित नील इंडिगो एक प्राकृतिक नीले रंग का रंजक है,जो पारंपरिक रूप से भारत से जुड़ा हुआ है। प्रारम्भ से ही नील भारत का उत्पादक रहा है।भारत में इस्तेमाल किये जाने के कारण नील इंडिगो नाम से जानी गई। प्राचीन काल में मिश्र में नील एन–टिकॉन और ग्रीस में इंड़िकान(भारत से प्राप्त) नाम से जानी जाती थी।

प्रमुख शब्दः बयाना, नील, मध्यकाल,रेशम–सूती वस्त्र,प्राकृतिक रंजक

विषय परिचयः नील या इंडिगो एक प्राकृतिक नीले रंग का पदार्थ है जो पारंपरिक रुप से भारत की एक महत्वपूर्ण फसल के रुप में उगाया जाता है जो चित्रकारों , कलाकारों,कपड़ा निर्माताओं और अन्य पदार्थो को रंगने के उपयोग में लाया जाता हैं। मूल रुप से भारत का उत्पाद होने के कारण इंडिगो शग्द ही नील का पर्याय बन गया । इंडिगो रंगद्रव्य का आधुनिक अग्रेंजी नाम है जो औधकांशतः कपड़ों को रंगने में प्रयुक्त किया गया। मध्य एशिया के मिश्र में यह रंगद्रव्य टिकॉन और ग्रीस यूनान में इंडिकॉन नाम से जाना जाता था,चीन में नीला रंजक वाले पौधे को इयान कोआ,जापान में एई सेताई और एबाना कहा गया। इंडिगो शब्द यूनान के इंडिकाना से लिया गया प्रतीत होता है जिसका अर्थ है–भारत से प्राप्त।

अन्य वनस्पति रंगो के विपरीत, नील को कच्ची,सूखी या हरी अवस्था में उपयोग नहीं किया जा सकता है,लेकिन इसे संसाधित करना पड़ता है।मध्य युगीन भारत के आगरा के निकटस्थ राजपूताना के बयाना क्षेत्र में समतल भूमि व उपजाऊ क्षेत्र होने के कारण प्रकृति प्रदत्त भौगोलिक परिस्थियों ने नील की खेती को प्रोत्साहन दिया और मेहनतकश किसानों ने स्वदेशी प्रोद्योगिकी उत्तम किस्म के नील उत्पाद को बढ़ाकर कर मुगल काल में राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक नील के व्यापार को उन्नत व समृद्ध किया।यह शोध पत्र इस तथ्य पर ध्यान केन्द्रित करता हैकि बयाना में नील बागान की वृद्धि और नील का प्रमुख नकदी फसल बनना साथ ही मुगल काल में यूरोप में नील उत्पादन की बढ़ती मांग ने कपड़ा उद्योग को समृद्ध किया इस पर प्रकाश डालने का प्रयास है।

उद्देश्य–

1बयाना के ऐतिहासिक महत्तव का अध्ययन करना

2.बयाना की उन्नत किस्म की नील के उत्पाद व व्यापार के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करना तथा कृषि प्रारूप पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना।

परिकल्पना

मुगल काल में नील की खेती और प्रसंस्करण मुख्य रुप से बयाना, आगरा, गुजरात, लाहौर और अवध में

किया जाता था। मुगल काल में राजपुताना की उन्नत किस्म की बयाना की नील की खेती ने रोमन व यूरोपीय को निर्यात कर नील व्यापार को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापारिक प्रतिस्पर्धात्मक बाज़ार प्रणाली के द्वारा नील के व्यावसायिक उत्पादन को व्यावहारिक स्वरुप प्रदान कर भारत की आर्थिक साख को बढ़ावा दिया। परिणामतः डच, रोमन, स्कॉटलैण्ड़ और अंग्रेज व्यापारी उच्च लाभ की संभावना से भारत आकर नील उत्पादन में निवेश प्रारम्भ किया।

शोध प्रविधि

प्राथमिक व द्वैत्यिक स्त्रोतों का तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन करना

पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व भारतीय व्याकरणविद् पाणिनी ने अपनी कृति अष्टाध्यायी में नील या डाई का उल्लेख किया है। बाद में भारत के उत्पाद नील के प्रयोग को यूरोपियन्स ने अन्तरा ष्ट्रीय स्तर प्रदान किया। जो भारत से नील रंगाई के काम आने वाला रंजक निर्यात का प्रमुख उत्पाद बन गया। मिश्र में भी यह रंगाई के नाम से प्रचलित हुआ। यूनानी लेखक प्लिनी ने ईसा की प्रथम शताब्दी के सातवें दशक में भारत से प्राप्त नील को इंडिकम शब्द से सम्बोधित किया।[1] भारत का संस्कृत शब्द नील ब्रिटिश वाणिज्य में इंडिगो नाम से प्रचलित रहा।[2] किसी भी राज्य के सांस्कृतिक निर्धारण में वहां की प्राकृतिक भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों की अहम भूमिका होती है। अतः जादोन वंश के अभ्युदय की पृष्ठभूमि में बयाना प्रदेश प्राचीन पौराणिक महाजनपदीय युग में मत्स्य तथा शूरसेन महाजनपदों[3] यह राज्य था।जो उत्तर भारत के वृहद् मैदानी भाग में पश्चिमी किनारे पर ट्रांस–यमुना का भाग है इसकी समतलता को उत्तरी एवं दक्षिणी भाग में अरावली की छोटी–छोटी पहाड़िया परिवर्तित करती है जिसमें सर्वोच्च चोटी अलीपुर–वैर 411 मीटर है दक्षिणी भाग में पहाड़ियों का यह भाग रूपवास और बयाना[4] तहसीलों में डांग कहलाता है तो कही इन्होंने 38 दर्रो का रूप धारण किया है, जिसका की ऐतिहासिक–भौगोलिक उदाहरण गधाखार व वर्तमान के भरतपुर की थर्मोपल्ली नामक दर्रे के रूप में भरतपुर के जाट इतिहास में तथा यहां के लोक भाषा कौशल के रूप में ''दक्खिन की कमाई गधाखार में गवाई'' आज भी प्रसिद्ध है। रियासत का मध्यवर्ती मैदान पुरातन व नवीन जलोढ़ के मिश्रण से बना है, जिसे बाणगंगा खादर एवं बांगर के रूप में जाना जाता है। यहां नदियों क प्रवाह तंत्र में मुख्य रूप से तीन वर्षा कालीन नदियां बाणगंगा, गम्भीरी, रूपारेल मुख्य है जिसके कारण यह प्रदेश बरसाती हरा भरा रहने वाला भौगोलिक प्रदेश है। इस प्रान्त की प्राकृतिक भौगोलिक परिस्थितियों ने यथा खारियापन, मानसूनी जल, दलदली–जंगली भूमि आदि के रूप में अपने आप को स्थापित किया तो वही यहां के आम–जनमानस ने मानवीय मूल्यों के सृजन के अन्तर्गत सांस्कृतिक प्रतीकों के रूप में जाट अक्खडपन व संघर्षी प्रवृत्ति को स्थापित किया जिसके विकासात्मक स्वरूप का दर्शन हमें जटवाडा–काठेढ़ प्रान्त के मथुरा राज्य में परिवर्तन के

दरमियान होता है। सामाजिक संगठनात्मक स्वरूप बहुत कुछ गणतंत्रात्मक अस्तरिकृत, अवर्गीकृत, अविभेदीकृत सामाजिक प्रणाली के समान था जिसमें की प्रत्येक कृषक जाट अपने को दूसरे अन्य जाट गौत्रिय के समान ही मानता था।

बयाना का प्राचीन नाम श्रीपथ या श्रीप्रस्थ था,बयाना शहर को वाराणसी शहर के नाम से भी सम्बोधित किया गया क्योंकि बाना कबीलों के जाटों के वंशासुर ने यहां शासन किया था।[5] मेहनतकश जाट जमींदारों मजदूर, कृषकों, कुटुम्ब–कबीलों में सुदृढ. निश्चल, संयम, उद्यमशीलता तथा परिश्रम से अन्यान्य परगनों में प्रवेश कर लिया था और अथक परिश्रम करके उत्पादन के साथ ही वहां के समााजिक परिवर्तन रहन–सहन के स्तर को ऊँचा उठाने की और ध्यान दिया। बयाना नील उत्पाद और निर्यात के संबंध में मध्यकालीन यूरोपीय निर्यातक रिपोर्ट आंकडे प्रस्तुत करती है जिससे प्रतीत होता है कि तत्कालीन समय में यूरोपियन मार्केट में बयाना की नील जिसे उस समय लाहौरी नील नाम से जाना जाता था कि मांग सर्वाधिक निर्यातित की जाने वाली वस्तुओं में से एक प्रमुख उत्पाद था[6]–

सारणी– प्रथम

प्रथम –	नील	सरखेज – 351600 महमूदी[7]
		लाहौरी – 278700 महमूदी
द्वितीय –	सूती कपड़े –	77000 महमूदी

उक्त दृष्टिगत आँकड़े 1618–19 निर्यात किये जाने वाली वस्तुओं की प्रविष्टि रॉयल ऐन के बीजक(रिकार्ड) में दर्ज की गई है। यह पोत सूरत से फरवरी में 722000 महमूदी अर्थात 28,8000रूप्ये मूल्य का सामान लेकर रवाना हुआ था।[8]

सारणी द्वितीय[9].

लंदन में प्रति (पोण्ड) नील का मूल्य (शिलंग, पेंस)

समय	बयाना		सरखेज	
	शिलींग	पेंस	शिलींग	पेंस
1609 के लगभग	(8	0)	(5	0)
1620–1630ई	(5	6 से	(4	0)
	(6	0 तक)	(4	6)
1649ई. के लगभग	(4	0)	(3	4)
1655ई. के लगभग	(6	0)	(3	4)
			(4	0) 64

सारणी तृतीय

प्राप्ति स्थल	सेंटमवेट में निर्यात
बयाना	1638–39ई – 385
	1639–40ई – 70
	1640–41ई – 927

प्राप्ति स्थल पर रूपये में प्रति सेंटमवेट भुगतान किया जाने वाला मूल्य–

बयाना	1638–39ई – 106–3
	1639–40ई – 93
	1640–41ई – 76.4

इस प्रकार निम्न तालिका आंकड़ों से ज्ञात होता है कि बयाना तत्कालीन समय में नील के कारण आर्थिक रूप से सम्पन्न नगर था जहा ं पर यूरोपियन्स की सीधे पहुंच थी। 1625 ई. में जो नील 12 रुपये प्रति मन ब्रिटिश व्यापारियों को दी गई वह 1629 ई.तक अगले वर्षो में बढ़ती मांग के कारण लागत 28 से 32 या 35 से 36 1/2 प्रति मन बेची गई जिसकी कीमत इंग्लैड़ में 24पौण्ड रुपये थी। ब्रिटिश व्यापारी ग्रेगोरी क्लेमेंट ने बयाना से 386 गांठे 35 से 37रुपये तक प्रति मन में क्रय की जिसकी लागत गुजरात की सरखेज नील से तीन गुना अधिक थी । विलीयम फोस्टर बयाना की नील की कीमत अधिक होने का कारण भारत में डच,पुर्तगाली, स्पेनिश,आर्मेनियन व मूर के बढ़ते व्यापार को

मानते है।[10] मुगल काल में भारतीय उपमहाद्वीप में बुनाई की तकनीकों में सुधार के कारण रेशम और सूती दोनों प्रकार की वस्त्र सामग्री का उत्पादन हुआ उत्तम गुणवत्ता के कारण बाजार की अर्थव्यवस्था उन्नत व समृद्ध होने लगी। भारत के बाजारों में कपड़ा उद्योग व यूरोप में ऊनी उद्योग में उपयोग के लिए एक संसाधित रंजक के रूप में, नील सत्रहवीं शताब्दी में निर्यात की एक प्रमुख अभूतपूर्व उत्पादक के रूप में प्रसिद्ध हुआ। नील रंग की बहुतायात व व्यापक घरेलू और विदेशी मांग ने नील के उत्पादन और व्यापार को प्रोत्साहित किया मध्ययुगीन काल में भारत में विशेषकर मुगल काल के दौरान कपड़ा और कपड़ा बनाने में उपयोग की जाने वाली तकनीक,रूपांकन और प्रौद्योगिकी में अति उत्साह दृष्टिगत हुआ। वस्त्रों के उत्पादन में कपड़ों के साथ–साथ सजावटी वस्तुएं,दीवार के पर्दे,कालीन और तम्बू आदि सहित विभिन्न उपयोग के लिए जरूरत को पूरा करने के लिए आवश्यकता बढ़ने लगी। भारत में दिल्ली,आगरा,बनारस, अहमदाबाद और ढाका सूती वस्त्र उत्पादक के केन्द्र थे। इंडिगो एक प्राकृतिक रंजक है,नीले रंग का जो पारंपरिक रूप से भारत से जुड़ा हुआ है। नील भारत में उगाया जाता है, इस्तेमाल किया जाता है इसलिए इसका नाम इंडिगो पड़ा।

तेंहरवीं शताब्दी के वेनिस इतालवी व्यापारी यात्री **मार्को पालो**(1298ई.) ने लिखा कि भारत मे नील एक निश्चित जड़ी–बूटी से बनाई जाती थी पोधो को काटना, सफाई करना और फिर उसे पानी में सड़ने के लिए रखने के बाद महीन व उत्तम कोटि की नील प्राप्त की जाती थी। रुसी यात्री अथानासियस निकितिन (1468ई.) ने भारत के बयाना से निर्मित नील का कम्बाट(कैम्बे) से निर्यात किये जाने का उल्लेख करते है। यूरोपियन राज्यों में नील व्यापार का प्रभाव– मुगल काल में नील का उत्पादन और अधिक मांग के रुप में गतिशील उद्योग था। स़त्रहवीं शताब्दी के प्रथम दशक में डच व ब्रिटिश के आगमन के साथ उनके साथ किये गये व्यापार ने नील उद्योग को वैश्विक व्यापार के रुप में प्रारम्भ करने से यह भारत का महत्वपूर्ण व्यापारिक लोकप्रिय निर्यात का उत्पाद बन गया जिसने भारतीय व यूरोपियन्स के मध्य पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता को बढ़ाया। 1601 में डच यात्री वैन डेन्सन ने 1607 ई. में नील की व्यापारिक महत्व के इसके व्यापार को प्रोत्साहन दिया।[11] **ब्रिटिश यात्री विलियम फिंच** ने 30 अगस्त,1609 को अपने यात्रा विवरण में उल्लेखित किया कि भारत में नील की तीन किस्मों का उत्पादन होता था प्रथम– सबसे उत्कृष्ट कोटि की किस्म आगरा के पास बयाना की थी जो 40 से 60 महमूदी प्रति मन की दर से बिकती थी। द्वितीय–गुजरात में अहमदाबाद के पास सरखेज में उत्पादित नील मध्यम किस्म की जो 25 से 30 महमूदी प्रतिमन की दर से तथा तृतीय किस्म की कैमबे और सूरत के मध्य जम्बूसर की हल्की किस्त की नील का मूल्य 15 से 20 महमूदी प्रतिमन दर से बेची जाती थी।[12] इतालवी यात्री निकालो डी कोंटे, डच व्यापारी लिंसचोटन, फ्रांसीसी व्यापारी टैवर्नियर तथा अबुल फजल ने आईन–ए–अकबरी ने भारत में नील निर्माण की प्रकिया का विशद वर्णन किया है। भारत के बाहर अलेक्जेंड्रिया और वेनिस विपणन के केन्द्र थे। हिन्द– अरब महासागर की फारस की खाड़ी और भूमध्यसागरीय के मार्ग द्वारा यूरोप में पुर्तगाल,डच, स्पेनिश और इंग्लैड़ के वाणिज्य की वस्तु बन गई। मुगलकालीन निर्यात व्यापार की प्रमुख वस्तुओं में से नील युरोपिय व्यापारियों के लिए गुणवत्तपूर्ण और अर्थव्यवस्था का आधार बन गई और दिन प्रतिदिन इसकी मांग में वृद्धि होती गई। [13]

1615 ई. में यूरोप में रंगाई के प्रयोजन के लिए इसकी भारी मांग रहीं। बयाना की नील इसकी अधिक कीमत और अधिक दूरी के बावजूद गुजरात के सरखेज की तुलना में 1624 तक इसकी मांग बढ़ने लगी। बयाना के उत्पाद नील ने कपड़ों,कागज,भित्तीचित्रों, दीवारों, चट्टानों आदि पर पेंटिग के माध्यम से नील के उत्पादन और मांग ने ऐतिहासिक सफलता दर्ज की और यूरोप की विदेशी कंपनियों के मध्य नील के व्यापार ने पारस्परिक प्रतिद्वन्द्वता तथा तीव्र प्रतिस्पर्धा उत्पन्न की।[14]

सेलहवीं शताब्दी में डच,अग्रेज, तुर्क के व्यापारियों द्वारा बयाना के नील उत्पाद को व्यापार में प्राथमिकता देने के कारण अकबर ने नील फसल की पैदावार को उन्नत किया गया। मुगल काल के समय इंग्लैंड ने अरब के साथ व्यापारिक संबंधों को बढ़ावा दिया और सूरत को इसका केन्द्र बनाया। बयाना की नील गोल गेंद के रुप में शुद्ध होती थी जबकि सरखेज की नील चपटी केक के रुप में थी जिसमें रेत की मात्रा अधिक होने के कारण अशुद्ध थी। बयाना की नील के व्यापार ने अलीगढ़,आगरा और अवध व्यापारिक केन्द्र बन गये। जंहागीर के शासन काल के समय नील उत्पादक के संदर्भ में इरफान हबीब का कहना है कि नील की सबसे अच्छी पैदावार आगरा के पास बयाना पथ में होती थी,जबकि निम्न गुणवत्ता की खेती दोआब, खुर्जा और अलीगढ़ के कोल व अहमदाबाद के निकट सरखेज के आसपास की जाती थी। नील सबसे महत्तवपूर्ण उत्पाद बन गया।[15] 1609

ई. में विलियम फिंच द्वारा बयाना की नील को सम्मानजनक स्थान देकर इसे वाणिज्यिक गतिविधियों का प्रमुख उत्पाद बताया।[16] सर थॉमस रो ने भी बयाना के उत्पाद नील को वाणिज्य की प्रमख वस्तु बताया।

निर्ष्कषतः विषय अध्ययन से ज्ञात होता है कि मुगलकालीन भारत में बयाना के उत्पाद नील ने रोम व यूरोप में व्यापार– वाणिज्य को समृद्ध किया। आंतरिक व्यापार को बढ़ावा मिला इसमें स्थानीय, क्षेत्रीय और अंतर्क्षेत्रीय सभी स्तरों की महत्ती भूमिका रहीं। प्रारम्भ में भूमि मार्गो पर चीन,अरब,मिश्र,मध्य एशिया और अफगानिस्तान जैसे देशों के साथ व्यापार होता था। विदेशी व्यापारी पुर्तगाली, डच, फ्रेंच और इंग्लैंड से आने वाले व्यापारी उद्यमियों ने फारस की खाड़ी,हिन्द महासागर,भूमध्य सागर और लाल सागर के द्वारा भारत के उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार–वाणिज्य के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता की दृष्टि से प्रसिद्ध किये। भारतीय उपमहाद्वीप के समुद्री व्यापार और वाणिज्य को उन्नत व समृद्ध किया।

17वीं शताब्दी में भारत से बड़े पैमाने पर नील का निर्यात यूरोप में किया जाता था लेकिन तत्पश्चात् वेस्ट इंडीज़ के उत्पादकों की प्रतिस्पर्धा ने भारत के महत्वपूर्ण उत्पाद को यूरोपिय बाज़ारों से बाहर कर दिया फलतः उत्तरी भारत में उत्पादित नील की मांग मध्य पूर्व में बढ़ने लगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.हेनरी बेवरीज़, ए काम्प्रीहेन्सीव हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, सीविल मिलट्री एण्ड सोशल, वोल्यूम 2, लन्दन, ब्लैकी एण्ड़ सन्स प्रकाशन,पृष्ठ 161

2. हनुमान राज, कल्चर ऑफ इण्डिगो इन एशिया, इलाहबाद,संगम प्रकाशन, 1976,पृष्ठ 34,43

3. जाट राज्यों का मुल्तान– दिल्ली– आगरा–मथुरा – जयपुर जैसे अतिव्यस्तम् राज्यपथ के मध्य स्थित होते हुए तत्कालीन स्वर्णिम चर्तुराज्य पथों से संबंधात्मक स्थिति में होना, तथा उक्त रियासत का प्रादेशिक राजनीतिक ध्रुवीकरण तत्कालीन प्रसिद्ध मुगल राजधानी वाणिज्यिक नगर अकबराबाद तथा मथुरा के मध्य होना व्यापार की दृष्टि से महत्तवपूर्ण रहा। भौगौलिक सांस्कृतिक परिस्थितियों में यह क्षेत्र उस हेतु वाणिज्यिक परिस्थितियाँ मानो वरदान सिद्ध हुईं। इस रियासत का भौगौलिक स्थायित्व राजपूताने के पूर्वी छोर पर स्थित होने के कारण इसकी स्थिति तत्कालीन भारत व राजपूताने के मध्य सेतू रूप एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक उपलब्धि थी।

4.बयाना :– शोणितपुर इसी क्रम में ऐतिहासिक बयाना (शोणितपुर) लोहारी नील के लिए काफी महत्वपूर्ण वाणिज्यिक क्षेत्र रहा है यह ऐतिहासिक पथरीला सादृश्य क्षेत्र तत्कालीन समय में सम्पूर्ण यूरोप व हिन्दुस्तान में अपनी लाहौरी नील परिशुद्धता के कारण प्रसिद्ध था।

5 ''वर्तमान में यह पूर्वी सिंह द्वार क रूप में 260 –43′ से 270 50′ उत्तरी अक्षांश एवं 760 54′ से 770 49′ के मध्य अवस्थित है।'' सिंधु नदी तट से पंजाब, उत्तरी राजस्थान व यमुना के उत्तर की ओर ग्वालियर व चम्बल के पार तक जाट जाति का प्रसार रहा है, लेकिन इसमें भी यमुना व जाट जाति का आपस में आत्म समर्पित सम्बन्ध रहा है जिसके कारण यमुना नदी के काठे (किनारे) पर बडी मात्रा में कृषक जाटों ने अपनी कृषि बस्तियां बसाई जिसके फलस्वरूप उत्तर प्रदेश का नाम मध्यकालीन राजपूताने इतिहास में काठेढ़ व जटवाडा पड़ा। काठेढ़ शब्द जहां भौगोलिक विशेष अर्थो के लिये सम्बोधित था तो वही जटवाड़ा शब्द जाट समाज बाहुल्य विशेष अर्थो के लिये सम्बोधित था।

6.गुप्ता कुंज बिहारी लाल : द इवोल्यूशन ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द फोरमर भरतपुर स्टेट 1722–1947, पृ. स . 9,14

7.महमूदी मूलत : गुजराती मुद्रा थी जिसका कि मूल्य 1618–19 ई. में 1 महमूदी 2व 5 रू. के बराबर था।

8. मौरलैण्डो , ''फ्रॉम अकबर टू औरंगजेब'' ए स्टेडी इन इण्डियन इकोनोमिक हिस्ट्री , दिल्ली, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटरस,1923 पृष्ठ संख्या 89–90, 103–109

9. उपर्युक्त , पृ.सं. 100

10 वही पृ.सं. 101

फोस्टर,विलियम, द इंगलिश फेक्ट्रीज़ इन इण्डिया 1624–1629, ए कैलेण्डर ऑफ डोक्यूमेन्ट्स इन द इण्डिया ऑफिस, आक्सफोर्ड,एट द क्लेन्डरन प्रेस,1909 पृष्ठ 208,326,335 फेक्ट्री रिकार्ड्स, मिसलेनियस, वोल्यूम,1 पृष्ठ 134

11. जॉन फ्रेंपटॉन, (अनुवाद), द ट्रावेल्स ऑफ मार्कोपोलो, (द्वितीय संस्करण), लन्दन, द अरगोनॉट प्रेस,1923, पृष्ठ 112

12.जार्जवॉट, ए डिक्शनरी ऑफ द इकोनोमिक प्रोडक्ट ऑफ इण्डिया, भाग 4, नई दिल्ली,कोसमोस पब्लिशर्स,1972, पृष्ठ 412–413

13. मुकर्जी,राधाकुमुद,इण्डियन शीपिंग ए हिस्ट्री ऑफ द सी बोर्न ट्रेड़ एण्ड मेरीटाईम एक्टिविटिज़ फ्राम द एर्लियस्ट टाईम्स, न्यू यार्क, लोंगमेन्स,ग्रीन एण्ड़ कम्पनी,अलाहबाद 1962, पृष्ठ 191

14.फोस्टर,विलियम, द इंगलिश फेक्ट्रीज़ इन इण्डिया 1624–1629, ए कैलेण्डर ऑफ डोक्यूमेन्ट्स इन द इण्डिया ऑफिस, आक्सफोर्ड,एट द क्लेन्डरन प्रेस,1909 पृष्ठ XXV, 38

15. खडगे,रामसिंह, इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया अण्डर द मुगल एम्पायर,कलकत्ता,रॉय पब्लिशर्स, 1987 पृष्ठ 72

16. फिंच, विलियम, द अर्ली ट्रावेल्स ऑफ इण्डिया 1583–1619 ए.डी., एडिटेड बाय फॉस्टर,विलियम, एस. चांद एण्ड़ कम्पनी, न्यू दिल्ली,1968,पृष्ठ 152–154